# संपादकीय

भारतीय भाषा दिवस के बहाने

"हर भाषा में बसती है, एक नई दुनिया की बात,
ज़ुबां जो सीखे, वही समझे दिलों की सौगात।"

भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी पहचान, हमारी संस्कृति और हमारे अस्तित्व की धरोहर हैं। भारतीय भाषाओं को संरक्षित करना, अपनी जड़ों को सहेजना है। सी. सुब्रमण्यम भारती एक भारतीय लेखक, कवि, पत्रकार, शिक्षक, भारतीय स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक और बहुभाषी थे। उन्हें उनकी कविताओं के लिए भारती की उपाधि दी गई थी और वे आधुनिक तमिल कविता के अग्रदूत थे। वे अपनी उपाधि भारती या भारतियार और अन्य उपाधि "महाकवि भारती" से लोकप्रिय हैं । उनकी रचनाओं में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान रचित देशभक्ति के गीत शामिल हैं । उन्होंने महिलाओं की मुक्ति के लिए, बाल विवाह के खिलाफ लड़ाई लड़ी, जाति व्यवस्था का विरोध किया। उनके इस योगदान के मद्दे नज़र 2023 से उनके जन्म दिवस के अवसर पर भारतीय भाषा दिवस हर वर्ष 11 दिसंबर को मनाया जाने लगा है। यह दिन भारतीय भाषाओं की समृद्धि, विविधता और महत्व को पहचानने और उनका संरक्षण करने के उद्देश्य से मनाया जाता है। इसे भारतीय भाषा उत्सव के नाम से भी जाना जाता है।

यह दिन भारतीय भाषा की विविधता, क्षेत्रीय बोलियों के संरक्षण, राष्ट्रीय एकता, भारतीय भाषाओं के माध्यम से साहित्य और सांस्कृतिक कला को पहचानना और इसके लिए प्रेरणा देना महत्त उद्देश्य है। भारत में 22 आधिकारिक भाषाएँ और सैकड़ों क्षेत्रीय भाषाएँ और बोलियाँ हैं। यह दिन भारतीय भाषाओं की इस अद्वितीय विविधता और सांस्कृतिक धरोहर का सम्मान करने के लिए मनाया जाता है। हम देख रहे हैं कि कई क्षेत्रीय भाषाएँ धीरे-धीरे विलुप्त हो रही हैं। यह दिन हमारी भाषाओं को संरक्षित करने और उन्हें नई पीढ़ियों तक पहुँचाने के महत्व को रेखांकित करता है। भारतीय भाषाएँ हमारी सांस्कृतिक विविधता के बावजूद, हमें एकता के सूत्र में बाँधती हैं। यह दिन हमें याद दिलाता है कि भाषाई विविधता हमारी राष्ट्रीय एकता को मजबूत करती है। भारतीय भाषाओं ने विश्व साहित्य, कला, संगीत और दर्शन को अनमोल योगदान दिया है। इस दिन का उद्देश्य इन उपलब्धियों को पहचानना और प्रेरणा लेना है। मातृभाषा में शिक्षा, संवाद और संस्कृति का संरक्षण समाज को अधिक सशक्त बनाता है। यह दिन मातृभाषाओं के महत्व पर जोर देने के लिए भी मनाया

जाता है। भारतीय भाषा दिवस हमें हमारी भाषाओं की शक्ति, सौंदर्य और महत्व का स्मरण कराता है। यह दिन सभी नागरिकों से आह्वान करता है कि वे अपनी मातृभाषा और अन्य भारतीय भाषाओं के विकास और प्रचार-प्रसार के लिए योगदान दें।, उनका आदर और सम्मान करें। आज ज़रूरी है कि हम अपनी भाषाओं की अस्मिता को बनाए रखें। उनके व्यवहार से तथा उनमें उपलब्ध साहित्य की महत्ता को रेखांकित कर उनका उत्सव मनाना भी आवश्यक है। 'आखर पत्रिका' जहाँ हिंदी को महत्व देती हैं वहीं भारतीय भाषा के उत्थान को भी उतना ही महत्व देती है। भारतीय भाषाओं में लिखित साहित्य को हिंदी के माध्यम से लोगों तक पहूँचाने के लिए आखर एक मंच के रूप में सदैव प्रस्तुत है।

इस अंक में सर्दी और स्वास्थ्य से संबन्धित विशेष आलेख, शोधालेख ,कविता, कहानी तथा यात्रा वृतांत आपके अवलोकनार्थ है। आशा है आपको यह अंक पसंद आए।

इति नमस्कारान्ते....

**प्रधान संपादक**

**प्रो. प्रतिभा मुदलियार**